जैविक खेती: वर्तमान स्थिति और भविष्य की संभावनाएं

-डॉ. एच.एल. शर्मा

भारत में कृषि परिदृश्य को बदलने की महत्वपूर्ण क्षमता के साथ, जैविक खेती एक बढ़ते आंदोलन के रूप में विकसित हुई है। पर्यावरणीय स्थिरता, स्वस्थ उपज और मिट्टी के स्वास्थ्य के लाभ जैविक खेती को किसानों और उपभोक्ताओं के लिए एक व्यवहार्य और आकर्षक विकल्प बनाते हैं। प्रौद्योगिकी समावेशन, अनुसंधान, नीति समर्थन और उपभोक्ता जागरूकता देश में जैविक खेती की पूरी क्षमता को साकार करने में सहायक हैं। निसंदेह किसानों, नीति निर्माताओं और जनता के ठोस प्रयासों से जैविक खेती भारतीय कृषि के लिए एक हरित और अधिक टिकाऊ भविष्य में योगदान दे सकती है।

नियोजित आर्थिक विकास के सात दशकों के दौरान भारत ने कृषि क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। देश में खाद्यान्न उत्पादन में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है, जो 1950-51 में 50.8 मिलियन टन से बढ़कर 2022-23 में 329.7 मिलियन टन के प्रभावशाली स्तर तक पहुँच गया है। उल्लेखनीय रूप से, भारत में खाद्यान्न उत्पादन में यह वृद्धि (2.71 प्रतिशत की वार्षिक चक्रवृद्धि दर) पिछले 72 वर्षों के दौरान जनसंख्या की वृद्धि दर (1.98 प्रतिशत) को पीछे छोड़ चुकी है, जैसा कि संयुक्त राष्ट्र के नवीनतम अनुमानित जनसंख्या आंकड़ों से पता चलता है। देश में कृषि उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि, मुख्य रूप से हरितक्रांति के बाद की अवधि के दौरान, उच्च उपज वाले बीजों, रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों के बढ़ते उपयोग के माध्यम से हासिल की गई है। हालांकि इन आदानों ने उपज बढ़ाने में योगदान दिया लेकिन साथ ही, मानव स्वास्थ्य और पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रतिकूल प्रभाव के बारे में चिंताएं बढ़ा दीं। हरितक्रांति के बाद के काल में रासायनिक आदानों के अंधाधुंध और अत्यधिक उपयोग ने लंबे समय में कृषि की सततता के बारे में चिंताएं बढ़ा दी हैं, जिससे सतत कृषि प्रथाओं के विकल्प को बढ़ावा मिला है।

लेखक प्राचार्य, पी.जी. कॉलेज, नेरवा ज़िला शिमला, हिमाचल प्रदेश हैं। ई-मेल : hlsharmablp@gmail.com

जैविक खेती की आवश्यकता एवं लाभ

भारत में जैविक खेती को अपनाना कई कारणों से ज़रुरी है। इसके अनेक लाभ हैं जो पर्यावरण, समाज और अर्थव्यवस्था के समग्र कल्याण में योगदान देते हैं। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण है- जैविक खेती जैव विविधता को बढ़ावा देती है; मिट्टी के स्वास्थ्य का संरक्षण करती है और कृत्रिम कीटनाशकों और उर्वरकों का उपयोग न किए जाने से जल प्रदूषण कम होता है जिससे कृषि की दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित होती है। इसके अलावा, जैविक कृषि पद्धतियों को अपनाने से एक तरफ किसानों का खेती की तरफ रुझान लौट रहा है तो दूसरी तरफ, इससे किसानों की समृद्धि में योगदान मिलता है। जैविक खेती इनपुट लागत को कम करती है और किसानों को बेहतर बाज़ार पहुँच के अवसर उपलब्ध करा कर उन्हें आर्थिक स्थिरता प्रदान करती है। पर्यावरण अनुकूल और रसायनमुक्त उत्पादों की बढ़ती मांग प्रीमियम मूल्य दिलाती है और इस प्रकार बेहतर आय और बाज़ार पहुँच प्रदान करती है। रासायनिक आदानों पर निर्भरता कम होने से कृषक समुदाय के समग्र स्वास्थ्य में सुधार होता है।

जैविक खेती उपभोक्ताओं को स्वस्थ और सुरक्षित भोजन का विकल्प प्रदान कर महत्वपूर्ण लाभ प्रदान करती है। जैविक उत्पाद रासायनिक अवशेषों से मुक्त होते हैं और उनमें अक्सर उच्च पोषण मूल्य होता है, जो उपभोक्ताओं के बेहतर समग्र स्वास्थ्य में योगदान देता है। जैविक खेती की प्रथाएं प्राकृतिक आदानों और टिकाऊ तरीकों पर ज़ोर देती हैं, जिसके परिणामस्वरूप पोषक तत्वों से भरपूर फसलें होती हैं जिनमें अक्सर विटामिन, खनिज और एंटीऑक्सीडेंट का उच्च स्तर होता है। इसके अलावा, जैविक उत्पादों में आनुवांशिक रूप से संशोधित जीवों की अनुपस्थिति प्राकृतिक और असंशोधित खाद्य उत्पादों के लिए उपभोक्ता की प्राथमिकताओं के अनुरूप है।

पर्यावरण अनुकूल प्रथाओं को बढ़ावा देकर, जैविक खेती न केवल किसानों और उपभोक्ताओं का कल्याण करती है, बल्कि भारत के समग्र पारिस्थितिकीय संतुलन में भी योगदान देकर एक लचीले और टिकाऊ कृषि भविष्य का समर्थन करती है। सरकारी स्तर पर, जैविक खेती को बढ़ावा देना पर्यावरण संरक्षण लक्ष्यों के अनुरूप है और सतत विकास में योगदान देता है। यह संभावित रूप से जैविक उत्पादों के लिए अंतरराष्ट्रीय बाज़ार खोलता है, जिससे देश के कृषि निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। जैविक खेती पर ज़ोर भोजन में रासायनिक अवशेषों से संबंधित सार्वजनिक स्वास्थ्य चिंताओं को भी संबोधित कर सकता है, जिससे संभावित स्वास्थ्य देखभाल लागत में बचत हो सकती है। कुल मिलाकर, भारत में जैविक खेती को व्यापक रूप से अपनाना एक समग्र समाधान प्रस्तुत करता है जो पर्यावरण, आर्थिक और सार्वजनिक स्वास्थ्य हितों में सामंजस्य स्थापित करता है।

जैविक खेती की स्थिति

भारत में जैविक खेती प्रणाली की एक समृद्ध ऐतिहासिक नींव है, जो प्राचीनकाल से चली आ रही है। इसकी उत्पत्ति उन पारंपरिक कृषि प्रथाओं से पता लगाई जा सकती है जो सहस्राब्दियों के दौरान असंख्य गांवों और कृषि समुदायों में विकसित हुई हैं। पश्चिमी दुनिया में जैविक उत्पादों की बढ़ती मांग के कारण आधुनिक मानकों पर आधारित जैविक कृषि ने हाल ही में गति पकड़ी है।

2001 में शुरू किए गए राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम (एन.पी.ओ.पी.) ने देश में जैविक कृषि क्षेत्र के व्यवस्थित विकास की नींव रखी। एन.पी.ओ.पी. को भारत सरकार के वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के तहत एपीडा द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है। एन.पी.ओ.पी. जैविक कृषि प्रक्रियाओं के विभिन्न पहलुओं की मान्यता और प्रमाणन के लिए एक संस्थागत ढांचा प्रदान करता है। विशेष रूप से, उत्पादन और मान्यता के लिए एन.पी.ओ.पी. मानकों ने संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोपीय संघ और स्विट्जरलैंड जैसे देशों सहित अंतरराष्ट्रीय मान्यता अर्जित की है। एन.पी.ओ.पी. को 2004 में विनियमन (एफटीडीआर) अधिनियम के तहत विदेश व्यापार विकास के दायरे में लाया गया था। इस अधिनियम के अनुसार, किसी भी जैविक उत्पाद का भारत से तब तक निर्यात नहीं किया जा सकता है जब तक कि यह एन.पी.ओ.पी. के तहत प्रमाणित न हो।

देश में जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए 2004 में स्थापित राष्ट्रीय जैविक खेती केंद्र एक नोडल संगठन है। मार्च 2022 में इसका नाम बदलकर राष्ट्रीय जैविक और प्राकृतिक खेती केंद्र (एनसीओएनएफ) कर दिया गया। एनसीओएनएफ अपने पांच क्षेत्रीय केंद्रों के साथ जैविक, प्राकृतिक और पुनर्योजी कृषि विधियों सहित रसायन मुक्त टिकाऊ कृषि प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम, कार्यशालाएं आयोजित करके और उन्हें जानकारी प्रसारित करके हितधारकों की क्षमता निर्माण पर ध्यान केंद्रित करता है।

जैविक खेती के अंतर्गत क्षेत्र

जैविक खेती के तहत कुल क्षेत्रफल के मामले में भारत दुनिया का छठा सबसे बड़ा देश है। वर्तमान में जैविक खेती का शुद्ध खेती योग्य क्षेत्र का लगभग 2.4% या तो प्रमाणित है या रूपांतरण प्रक्रिया में है। 31 मार्च, 2023 को 'जैविक उत्पादन के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम' के तहत पंजीकृत जैविक प्रमाणीकरण का कुल क्षेत्रफल देश में 101.72 लाख हेक्टेयर तक पहुँच गया। इसमें 53.92 लाख हेक्टेयर में खेती की गई और 47.80 लाख हेक्टेयर वन्य उत्पाद संग्रह क्षेत्र (तालिका-1) शामिल है। छतीसगढ़ अपने विशाल वन्य उत्पाद संग्रह क्षेत्र के चलते अग्रणी धावक के रूप में उभरा, जो जैविक खेती के तहत देश के कुल क्षेत्र का लगभग 32 प्रतिशत योगदान देता है। (चित्र-1) इसके बाद मध्य प्रदेश (22.83 प्रतिशत), महाराष्ट्र (12.63 प्रतिशत), राजस्थान (9.22 प्रतिशत), गुजरात (9.20 प्रतिशत), हिमाचल प्रदेश (2.10 प्रतिशत) और ओडिशा (1.95 प्रतिशत) का स्थान है। शीर्ष 10 राज्य देश में जैविक खेती के तहत कुल क्षेत्रफल का लगभग 94 प्रतिशत हिस्सा इन शीर्ष 10 राज्यों में है। सिक्किम 2016 से पूरे विश्व में पूरी तरह से जैविक खेती करने वाला पहला राज्य बन गया। त्रिपुरा, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड सहित अन्य राज्यों ने भी इसी तरह के लक्ष्य निर्धारित किए हैं। ऐतिहासिक रूप से, उत्तर-पूर्व भारत ने देश के बाकी हिस्सों की तुलना में काफी कम रासायनिक खपत के साथ जैविक प्रथाओं का पालन किया है। इसी तरह, आदिवासी और द्वीप क्षेत्रों में जैविक आख्यानों को संरक्षित और बढ़ावा देने के प्रयास चल रहे हैं।

भारत को 15.99 लाख जैविक उत्पादकों के साथ दुनिया में सबसे अधिक जैविक किसान होने का गौरव प्राप्त है। वर्ष 2021 के नवीनतम FiBL डेटा के अनुसार, दुनिया के प्रमाणित जैविक उत्पादकों में से 43 प्रतिशत से अधिक हमारे देश में हैं। इस प्रकार, भारत ने जैविक खेती के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति की है और खुद को दुनिया के शीर्ष देशों में स्थान दिया है। हालाँकि, अग्रणी देशों की तुलना में, देश में अभी भी अप्रयुक्त क्षमता है। इस अंतर को पाटना देश के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खुद को सक्षम रूप से स्थापित करने के लिए ज़रूरी है।

जैविक उत्पादन

भारत अपनी विविध समुद्री जलवायु परिस्थितियों के साथ, व्यापक पैमाने पर जैविक उत्पादों की खेती करने की महत्वपूर्ण क्षमता से संपन्न है। विभिन्न क्षेत्रों में जैविक

तालिका-1 : भारत में सबसे अधिक जैविक क्षेत्र वाले शीर्ष दस राज्य (NPOP 2022-23)

क्र. सं.	राज्य	जैविक	वन्य उत्पाद	कुल जैविक क्षेत्र (लाख है.)
1	छत्तीसगढ़	0.17	32.36	32.5
2	मध्य प्रदेश	15.17	8.05	23.2
3	महाराष्ट्र	12.84	0.00	12.8
4	राजस्थान	5.81	3.57	9.4
5	गुजरात	9.36	0.00	9.4
6	हिमाचल प्रदेश	0.11	2.02	2.1
7	ओड़िशा	1.95	0.04	2.0
8	उत्तराखंड	0.98	0.06	1.0
9	उत्तर प्रदेश	0.68	0.30	0.98
10	कर्नाटक	0.82	0.03	0.8
	अन्य सभी राज्य	6.02	1.38	7.4
	भारत	**53.92**	**47.80**	**101.72**

स्रोत : एपीडा, वर्ष 2022-23 के लिए आंकड़े

नोट : कुल जैविक क्षेत्र + खेती योग्य क्षेत्र + रूपांतरण में खेती योग्य क्षेत्र + वन्य उत्पाद संग्रह क्षेत्र

चित्र 1 : भारत में सबसे अधिक जैविक क्षेत्र वाले शीर्ष दस राज्य

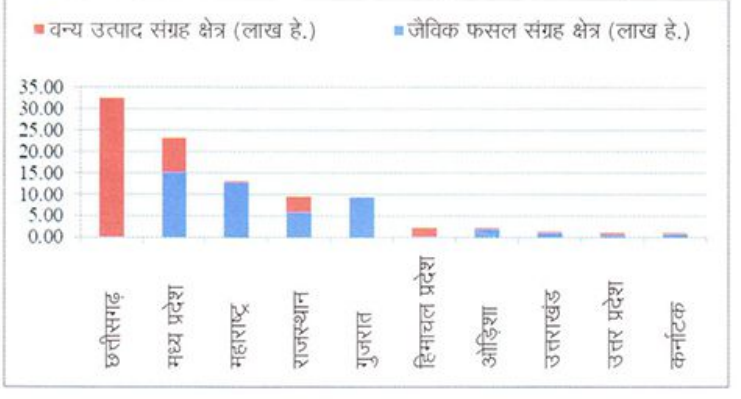

खेती की अंतर्निहित परंपरा की उपस्थिति इस क्षमता को और बढ़ाती है। यह सांस्कृतिक विरासत न केवल अद्वितीय आयाम जोड़ती है, बल्कि जैविक उत्पादकों के लिए लाभप्रद आधार भी प्रदान करती है। भारत ने वर्ष 2022-23 (तालिका-2) के दौरान जैविक खेतों और जंगली क्षेत्रों दोनों से 2,972.39 हज़ार मीट्रिक टन उत्पादन हासिल करके एक सराहनीय मील का पत्थर हासिल किया है। इस पर्याप्त उत्पादन में विविध खाद्य पदार्थ-अनाज, दालों से लेकर बाजरा, तिलहन, चाय, कॉफी, फल, सब्जियां, मसाले, सूखे मेवे, गन्ना और प्रसंस्कृत भोजन शामिल है। जैविक

उत्पादन केवल खाद्य क्षेत्र तक ही सीमित नहीं है, बल्कि जैविक कपास, फाइबर, औषधीय एवं हर्बल सुगंधित पौधों की खेती को भी शामिल कर अपनी पहुँच बढ़ाई है। जैविक प्रथाओं के प्रति भारत की प्रतिबद्धता न केवल उत्पादन की भारी मात्रा बल्कि उत्पाद श्रेणियों के व्यापक स्पेक्ट्रम

तालिका 2: सबसे अधिक जैविक उत्पादन वाले भारत के शीर्ष दस राज्य (2022-23)

(हज़ार मीट्रिक टन)

क्र. सं.	राज्य	जैविक कृषि उत्पादन	वन्य क्षेत्र उत्पादन	कुल जैविक उत्पादन
1	मध्य प्रदेश	825.63	2.34	827.96
2	महाराष्ट्र	790.33	0.02	790.35
3	राजस्थान	322.97	2.77	325.74
4	कर्नाटक	237.09	0.42	237.51
5	उत्तर प्रदेश	217.52	0.15	217.67
6	गुजरात	139.73		139.73
7	ओडिशा	130.08	0.32	130.39
8	जम्मू और कश्मीर	50.23	1.57	51.81
9	उत्तराखंड	43.95	0.11	44.06
10	केरल	42.73		42.73
	अन्य सभी राज्य	152.66	11.77	164.44
	भारत	**2,952.93**	**19.47**	**2,972.39**

स्रोत : एपीडा, वर्ष 2022-23 के लिए आंकड़े

चित्र 2: सबसे अधिक जैविक उत्पादन वाले भारत के शीर्ष दस राज्य (2022-23)

(हज़ार मीट्रिक टन)

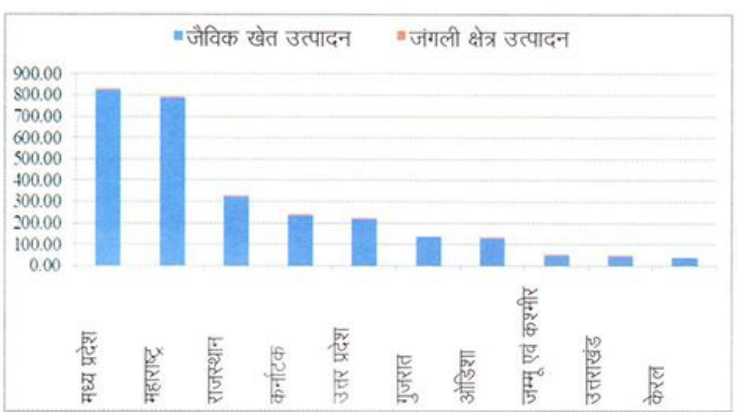

स्रोत : एपीडा, वर्ष 2022-23 के आंकड़े

में भी दिखाई देती है; इस तरह भारत पर्यावरण-अनुकूल कृषि प्रथाओं को बढ़ावा देने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका को सुदृढ़ कर रहा है। विभिन्न राज्यों में मध्य प्रदेश जैविक उत्पादों का एकल सबसे बड़ा उत्पादक है। यह देश के जैविक उत्पादन का लगभग 28 प्रतिशत योगदान देता है। इसके बाद महाराष्ट्र (27 प्रतिशत), राजस्थान (11 प्रतिशत), कर्नाटक (8 प्रतिशत) और उत्तर प्रदेश (7 प्रतिशत) का स्थान है (चित्र-2)। शीर्ष रैंकिंग वाले इन पांच राज्यों का देश में जैविक उत्पादन में सामूहिक रूप से हिस्सा लगभग 81 प्रतिशत है जो देश भर के अन्य क्षेत्रों में जैविक खेती प्रथाओं को व्यापक रूप से अपनाने के लिए पर्याप्त अवसर को रेखांकित करता है। वस्तुओं के संदर्भ में फाइबर फसलें सबसे बड़ी श्रेणी हैं जिसके बाद तेल बीज और गन्ने की फसलें आती हैं।

जैविक उत्पादों का निर्यात

ग्रामीण स्तर पर जैविक खेती की समृद्ध परंपरा और विविध कृषि जलवायु स्थितियां वैश्विक स्तर पर जैविक उत्पादों की बढ़ती मांग को पूरा करने में भारत को एक प्रमुख खिलाड़ी बनाती हैं। भारत में जैविक खेती मुख्य रूप से निर्यात-गहन है। वित्तीय वर्ष 2022-23 के दौरान, भारत का जैविक निर्यात प्रभावशाली 312,800.51 मीट्रिक टन तक पहुँच गया। जैविक उत्पादों के निर्यात से उत्पन्न राजस्व लगभग 5,525.18 करोड़ रुपये (708.33 मिलियन अमेरिकी डॉलर) था। भारत के उच्च गुणवत्ता वाले जैविक निर्यात संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोपीय संघ सहित कनाडा, ग्रेट ब्रिटेन, स्विट्जरलैंड, तुर्की, ऑस्ट्रेलिया, इक्वाडोर, कोरिया गणराज्य, वियतनाम, जापान और विभिन्न अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अपनी जगह बना सकते हैं। इन देशों में पर्याप्त क्रयशक्ति और बड़ी संख्या में स्वास्थ्य के प्रति जागरूक उपभोक्ताओं के चलते जैविक उत्पादों की मांग बढ़ रही है। उम्मीद है कि भारत का जैविक निर्यात तेज़ी से बढ़कर 2026 तक लगभग 2,601 मिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँच जाएगा।

सरकारी पहल

भारत सरकार विभिन्न योजनाओं के माध्यम से जैविक खेती को सक्रिय रूप से बढ़ावा दे रही है, जिसका उद्देश्य स्थिरता को बढ़ाना और कृषि के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करना है। इस दिशा में राष्ट्रीय सतत कृषि मिशन (एनएमएसए) वर्ष 2014-15 से क्रियाशील है। एनएमएसए जल उपयोग दक्षता बढ़ाने, जैविक पोषक तत्व प्रबंधन को बढ़ावा देने और जलवायु-अनुकूल कृषि

पद्धतियों को अपनाने पर केंद्रित है। यह किसानों को जैविक और टिकाऊ कृषि तकनीकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए वित्तीय प्रोत्साहन, प्रशिक्षण कार्यक्रम और तकनीकी सहायता प्रदान करता है। इसके अलावा, परम्परागत कृषि विकास योजना (अप्रैल 2015 से प्रारंभ) किसानों को वित्तीय सहायता प्रदान करके जैविक कृषि पद्धतियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती है। पीकेवीवाई के तहत, जैविक फसलों की खेती के लिए किसानों के समूह बनाए जाते हैं और उन्हें इनपुट, बीज और अन्य आवश्यक संसाधनों के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। यह योजना न केवल जैविक खेती के रूपांतरण की सुविधा प्रदान करती है बल्कि सामुदायिक भागीदारी और सहयोग को भी बढ़ावा देती है। इन योजनाओं को लागू कर सरकार का लक्ष्य अधिक पर्यावरण अनुकूल और आर्थिक रूप से व्यवहार्य कृषि क्षेत्र बनाना है जो मिट्टी के क्षरण, पानी की कमी की चुनौतियों का समाधान कर सके और किसानों और पर्यावरण की समग्र भलाई को बढ़ावा दे।

चुनौतियां

सकारात्मक रुझानों के बावजूद भारत में जैविक खेती को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जैविक प्रथाओं के बारे में किसानों के बीच सीमित जागरूकता और शिक्षा, प्रमाणन की उच्च प्रारंभिक लागत और जैविक उत्पादों के लिए एक अच्छी तरह से स्थापित बाज़ार अवसंरचना की कमी कुछ ऐसी बाधाएं हैं जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता है। जैविक खेती की ओर स्थानांतरण की अवधि के दौरान, शुरुआत में पैदावार अस्थायी रूप से कम हो सकती है, जो उत्पादकों के लिए वित्तीय चुनौती पैदा करती है। किसानों को अक्सर प्राकृतिक तरीकों और पारंपरिक कृषि पद्धतियों का उपयोग करके कीटों और बीमारियों के प्रबंधन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जिससे जैविक तरीकों की प्रभावशीलता के बारे में संदेह पैदा होता है। गुणवत्ता नियंत्रण और प्रमाणन से संबंधित मुद्दों के साथ-साथ कड़े मानकों को बनाए रखते हुए परिचालन को बढ़ाने की अनिवार्यता, जैविक खेती के परिदृश्य को और अधिक जटिल बना देती है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए भारत में जैविक खेती के सतत विकास को सुनिश्चित करने के लिए शिक्षा, नीति समर्थन, अनुसंधान और बुनियादी ढांचे के विकास से जुड़े एक व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

आगे की राह

बढ़ती स्वास्थ्य चेतना और पर्यावरण संबंधी चिंताओं के कारण जैविक उत्पादों की मांग तेज़ी से बढ़ रही है। देश की क्षमता का लाभ उठाने के लिए रणनीतिक ज़ोर देना ज़रूरी है। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, जैविक खेती के तहत कम उत्पादकता के मुद्दे को संबोधित करने के लिए खेती की तकनीकों पर अनुसंधान और विकास में वृद्धि और जैविक खेती की दक्षता और लाभप्रदता बढ़ाने के लिए ज्ञान के बेहतर प्रसार की आवश्यकता है। प्रौद्योगिकी का समावेशन देश में जैविक खेती के भविष्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। सटीक खेती तकनीक, आईटी-आधारित निगरानी प्रणाली और डेटा विश्लेषण संसाधन उपयोग को अनुकूलित कर सकते हैं, किसानों को रियल टाइम जानकारी प्रदान कर सकते हैं और फसल की उपज में सुधार कर सकते हैं। इसके अलावा, नई पीढ़ी के किसानों के लिए जैविक खेती को अधिक कुशल और आकर्षक बनाने के लिए अनुसंधान और विकास में निवेश महत्वपूर्ण है। अनुकूल फसल किस्मों का विकास करना, नए जैविक कीट नियंत्रण तरीकों की खोज करना और नवीन तकनीकों के माध्यम से मिट्टी के स्वास्थ्य को बढ़ाना जैविक खेती की दीर्घकालिक स्थिरता में योगदान देगा।

जैविक खेती के विकास के लिए सरकार की ओर से निरंतर नीतिगत समर्थन आवश्यक है। मौजूदा योजनाओं को सुदृढ़ करना, वित्तीय प्रोत्साहन देना और किसानों के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करना जैविक प्रथाओं को व्यापक रूप से अपनाने के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करेगा। किसानों, उपभोक्ताओं, गैर-सरकारी संगठनों, शोधकर्ताओं, किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) और उद्यम सहित हितधारकों के बीच सहयोग और नेटवर्किंग को प्रोत्साहन से एक सहायक पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा मिलेगा। ज्ञान साझा करना, संसाधनों तक पहुंच और सामूहिक विपणन प्रयास भारत में जैविक खेती की समग्र व्यवहार्यता को बढ़ा सकते हैं। सबसे ऊपर, उपभोक्ताओं को जैविक उत्पादों के लाभों के बारे में शिक्षित करना जैविक उत्पादों की मांग को बनाए रखने की कुंजी है। संक्षेप में, चुनौतियों का प्रभावी ढंग से समाधान करके और अवसरों का लाभ उठाकर, भारत जैविक खेती और सतत कृषि पद्धतियों के क्षेत्र में वैश्विक अग्रदूत के रूप में उभरने के लिए तैयार है। ❑